शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 01-08

सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में नारी-चित्रण

✍ पूजा बरुवा

शोध-सार :

सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख स्तंभों में से वे अन्यतम हैं। छायावादी काव्य प्रेम और सौंदर्य का काव्य है। अतः नारी-चित्रण इस काव्यधारा की एक प्रमुख विशेषता है। सौंदर्य छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की कविताओं का केंद्रबिंदु है, चाहे वह प्रकृति का सौंदर्य हो या फिर नारी का। वे मूलतः प्रकृति के कवि हैं, लेकिन उसके साथ-साथ उनकी कविताओं में नारी के विविध रूपों का भी चित्रण हुआ है। उनकी कविताओं में नारी केवल प्रेमिका नहीं है; वह देवी, माँ, सहचरी, प्राण सभी रूपों में चित्रित हुई है। प्रकृति के कवि होने के कारण पंत ने प्रकृति के बीच भी नारी के विविध रूपों का उद्घाटन किया है। उन्होंने नारी के प्रत्येक रूप को आत्मा के स्तर पर गहनता के साथ अनुभूत किया है। माँ के रूप में नारी उन्हें दिव्यस्वरूपा प्रतीत होती है, तो प्रेमिका के रूप में वे उसके सौंदर्य का लुत्फ उठाना भी जानते हैं। उनकी कविताओं में नारी के सौंदर्य का अत्यंत सूक्ष्म एवं श्लील चित्रण मिलता है। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यापक एवं उदात्त है। एक ओर जहाँ उन्होंने नारी के सौंदर्य का बखान किया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने उपेक्षित तथा तिरस्कृत नारी के प्रति सच्ची सहानुभूति भी व्यक्त की है।

बीज शब्द : *सुमित्रानंदन पंत, नारी, प्रेम, सौंदर्य।*

1. प्रस्तावना :

छायावादी काव्यधारा में सुमित्रानंदन पंत (सन् 1900ई॰ – सन् 1977 ई॰) का प्रमुख स्थान है। छायावादी काव्य प्रेम तथा सौंदर्य का काव्य है। अतः नारी-चित्रण इस काव्यधारा की एक प्रमुख विशेषता है। छायावाद ने अपने नवीन सौंदर्य-बोध द्वारा रीतिकालीन बंधनों को तोड़ा और नारी संबंधी एक नवीन दृष्टिकोण की स्थापना की। लगभग सभी छायावादी कवियों ने नारी को एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। सौंदर्य छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की कविताओं का केंद्रबिन्दु है, चाहे वह प्रकृति का सौंदर्य हो या फिर नारी का। वे मूलतः प्रकृति के कवि हैं, लेकिन इसके साथ-साथ उनकी कविताओं में नारी के विविध रूपों का भी चित्रण हुआ है। उनकी कविताओं में नारी केवल प्रेमिका नहीं है। वह देवी, माँ, सहचरी, प्राणवल्लभा सभी रूपों में चित्रित हुई है। प्रकृति के कवि होने के कारण पंत ने प्रकृति के बीच भी नारी के विविध रूपों का उद्घाटन किया है। उन्होंने नारी के प्रत्येक रूप को आत्मा के स्तर पर गहनता के साथ अनुभूत किया है। माँ के रूप में नारी उन्हें दिव्य स्वरूपा प्रतीत होती है तो प्रेमिका के रूप में वे उसके सौंदर्य का लुत्फ उठाना भी जानते हैं। उनकी कविताओं में नारी के सौंदर्य का इतना सूक्ष्म एवं श्लील चित्रण मिलता है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यापक एवं उदात्त है। नारी के रूप-सौंदर्य के चित्रण के साथ-साथ कवि ने नारी की दुःखद स्थिति का वर्णन किया है और इसके साथ ही उनकी कविताओं में नारी स्वतंत्रता का स्वर मुखरित हुआ। इसीलिए अपनी कविताओं में एक ओर जहाँ उन्होंने नारी के सौंदर्य का बखान किया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने उपेक्षित तथा तिरस्कृत नारी के प्रति सच्ची सहानुभूति भी व्यक्त की है।

नारी-चित्रण हिन्दी साहित्य के प्रत्येक काव्यधारा की विशेषता रही है। बदलते समय के साथ-साथ कवियों के नारी-विषयक दृष्टिकोण भी बदलने लगे। छायावादी काव्य इसका प्रमुख उदाहरण है। उससे पहले काव्य में नारी को उच्च स्थान नहीं दिया जाता था, पर छायावादी काव्य में नारी का एक अलग ही स्वरूप उभर कर सामने आया। इसमें सुमित्रानंदन पंत की विशेष भूमिका रही है। उनका नारी-चित्रण अन्य कवियों से भिन्न है। अतः उनकी कविताओं में नारी-चित्रण के संबंध में अध्ययन करना अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है।

2. विश्लेषण :

छायावादी काव्य में नारी का व्यापक चित्रण हुआ है। इस काव्यधारा में नारी की अभिव्यक्ति भिन्न रूपों में हुई है। छायावादी काव्य में नारी-चित्रण सूक्ष्म और श्लील रूप में हुआ है, इसमें कोई स्थूलता व निरावरणता नहीं पाई जाती। छायावादी नारी स्वप्निल है, कल्पना के रंगों में रंगी लौकिक होकर भी अलौकिक है।

इसमें नारी मात्र प्रियतमा ही नहीं है, वह माँ, बेटी, शक्ति, सहचरी, प्राणवल्लभा भी है। नारी के सौंदर्य-चित्रण में कहीं भी ऐंद्रियता का संस्पर्श नहीं है। छायावादी कवियों ने सर्वप्रथम नारी को मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित कर उसकी वेदना को सहलाया और उसके आँसू पोंछकर उसे श्रद्धा की मूर्ति घोषित की। छायावादी कवियों में पंत ने नारी का व्यापक चित्रण किया है। नारी-सौंदर्य के साथ-साथ उन्होंने नारी की तत्कालीन स्थिति का भी चित्रण किया है।

2.1. प्रेमिका के रूप में नारी :

जहाँ नारी है, वहाँ प्रेम का होना स्वाभाविक है। प्रेम हमेशा से ही छायावादी कवियों का प्रिय विषय रहा है। छायावादी प्रेम में उदारता, अतींद्रियता, मधुरता, निश्छलता, पवित्रता तथा स्वाभाविकता है। इसमें संयोग शृंगार भी है और वियोग शृंगार भी। संयोग शृंगार में जहाँ ऐन्द्रिय उद्दामता नहीं है, वहीं वियोग शृंगार में ऊहात्मकता न होकर स्वाभाविक मार्मिकता है। पंत नारी के प्रेम को विषय-वासना से दूर मानते हैं। पंत की 'ग्रंथि' कविता लौकिक विरहानुभूति को अभिव्यक्त करते हुए भी प्रेम के आदर्श रूप को प्रकट करती है -

यह विलंब ! कठोर-हृदये ! मग्न को
बालुका भी क्या बचाती है नहीं ?
निठुर का मुझको भरोसा है बड़ा,
गिरि-शिलाएँ ही अभय आधार हैं।

(सिंह 2013:86)

पंत ने नारी के आंगिक सौंदर्य का अवश्य वर्णन किया है, लेकिन केवल प्रेमिका के रूप में। उनकी 'ग्रंथि' कविता में उन्होंने अपनी प्रेमिका के रूप-सौंदर्य का बड़े ही स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है -

लाज की मादक सुरा-सी लालिमा
फैल गालों में,नवीन गुलाब-सी,
छलकती थी बाढ़-सी सौंदर्य की
अधखुले सस्मित गढ़ों से, सीप-से।

(सिंह 2013:85)

2.2. सुंदरी नारी :

मुख का सौंदर्य और आकर्षण नारी के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पंत ने 'ग्रंथि' कविता में अपनी प्रेमिका के मुख-सौंदर्य का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है -

इन्दु पर, उस इन्दु मुख पर, साथ ही
थे पड़े मेरे नयन, जो उदय से,
लाज से रक्तिम हुए थे, पूर्व को
पूर्व था, पर वह द्वितीय अपूर्व था !

(सिंह 2013:85)

कवि के अनुसार नारी स्वर्गीय सुषमा से परिपूर्ण है तथा उसके सौंदर्य में पावनता, उज्ज्वलता एवं सात्विकता का संस्पर्श है। 'नारी-रूप' नामक कविता में पंत ने नारी को देवी कहा है। प्रस्तुत कविता में उन्होंने नारी के विविध रूपों का एक साथ चित्रण करते हुए उसे ही सर्वस्व माना है -

घने लहरे रेशम के बाल

धरा से सिर में मैंने देवी !
तुम्हारा यह स्वर्गिक शृंगार,
स्वर्ण का सुरभित भार।
.....

तुम्हीं हो स्पृहा, अश्रु औ हास,
सृष्टि के उर की सांस,
तुम्हीं इच्छाओं की अवसान,
तुम्हीं स्वर्गिक आभास,
तुम्हारी सेवा में अनजान
हृदय है मेरा अंतर्धान ?
देवी ! माँ ! सहचरि ! प्राण !

(पंत 2004:208-209)

छायावादी कवियों में सौंदर्य-चेतना कूट-कूट कर भरी हुई है। पंत में भी अन्य छायावादी कवियों की तरह सौंदर्य-चेतना है। प्रकृति के सौंदर्य के साथ-साथ नारी के सौंदर्य को सजीवता से व्यक्त करने में वे पूर्णतः सफल हुए हैं। 'अप्सरा' नामक कविता में कवि ने नारी-सौंदर्य का सुंदर चित्र अंकित किया है -

अंग अंग अभिनव शोभा का
नव वसंत सुकुमार,
भृकुटि भंग नव नव इच्छा के
भृंगों का गुंजार,
शत शत मधु-आकांक्षाओं से
स्पंदित पृथु उर भार,
नव आशा के मृदु मुकुलों से
चुंबित लघु-पदचार।

(पाण्डेय 1982:138)

पंत प्रकृति-प्रेमी कवि हैं, इसीलिए तो वे नारी-सौंदर्य को प्रकृति के बीच भी परिलक्षित करते हैं। 'संध्या' कविता में संध्या सुंदरी का चित्रण वे इस प्रकार करते हैं -

कहो तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया में आप,
सुनहला फैला केश कलाप–
मधुर, मंथर, मृदु, मौन।

(http://www.namaste.in/hi/litrature)

पंत ने गंगा का मानवीकरण करते हुए उसे एक तपस्विनी का स्वरूप प्रदान किया है। स्वच्छ जल में सितारों से भरे आकाश का प्रतिबिंब कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है मानो किसी नायिका ने अपने गोरे अंगों पर नीला दुपट्टा डाल रखा हो –

गोरे अंगों पर सिहर सिहर, लहराता तार
तरल सुंदर,
चंचल अंचल-सा नीलाम्बर !

(सिंह 2013:94)

2.3. माँ के रूप में नारी :

'विनय' कविता में पंत ने माँ को संबोधित करते हुए लिखा है -

मेरे रति, कृति, व्रत, आचार
मा ! तेरी निर्भयता हों नित
तेरे पूजन के उपचार -
यही विनय है बारम्बार।

(पंत 2004:198)

2.4. सहचरी के रूप में नारी :

पंत ने 'पर्वत-प्रदेश में पावस' कविता में नारी को सहचरी के रूप में चित्रित किया है-

सरल शैशव की सुखद सुध सी वही
बालिका मेरी मनोरम मित्र थी !

(सिंह 2013:88)

2.5. ग्रामीण नारी :

पंत की कविताओं में नारी का शुद्ध रूप-वर्णन भी देखने को मिलता है। पर उसमें रीतिकालीन स्थूलता नहीं है। उनकी 'ग्राम युवती' नामक कविता में एक सहज-सरल ग्राम युवती के स्थूल रूप का सूक्ष्म वर्णन मिलता है। उनकी ग्राम युवती नायिका न होकर सामान्य ग्रामीण युवती मात्र है। कवि ने जिसका शुद्ध रूप-वर्णन किया है -

पनघट पर
मोहित नारी नर !
जब जल से भर
भारी गागर
खींचती उबहनी वह बरबस
चोली से उभर उभर कसमस
खिंचते संग युग रस भरे कलश
जल छलकाती,
रस बरसाती,
बलखाती वह घर को जाती,
सिर पर घट
उर पर घरपट।

(पाण्डेय 1982:139)

'ग्रामवधू' कविता में भी कवि ने सामान्य रूप से नारी-चित्रण किया है -

नहीं आंसुओं से आंचल तर
जन बिछोह से हृदय न कातर,
रोती वह रोने के अवसर,
जाती ग्रामवधू पति के घर।

(पाण्डेय 1982:161)

'ग्रामनारी' कविता में कवि ने ग्रामीण नारी का स्वाभाविक चित्रण इस प्रकार किया है -

स्वाभाविक नारी जन की लज्जा से वेष्टित,
नित कर्मनिष्ठ, अंगों की हृष्ट-पुष्ट सुंदर,
श्रम से जिस के क्षुधा काम चिर मर्यादित
वह स्वस्थ ग्राम नारी, नर के जीवन सहचर।

(बाफना 1969:296)

2.6. उपेक्षिता नारी :

कवि पंत पुरुषों द्वारा नारी को भोग्य सामग्री मात्र समझने के पूर्ण विरोधी हैं। पुरुषों के समाज में नारी केवल पुरुषों की लालसा की वस्तु बन गयी है। ऐसी स्थिति में कवि नारी के अस्तित्व की खोज करना चाहते हैं। 'नारी' कविता में कवि ने पुरुषों द्वारा पग-पग पर तिरस्कृत नारी के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है --

हाय, मानवी रही न नारी लज्जा से
अवगुंठित,
वह नर की लालसा प्रतिमा, शोभा सज्जा से
निर्मित !
युग-युग की वंदिनी, देह कारा में निज
सीमित,
वह अदृश्य अस्पृश्य विश्व को, गृहपशु-सी ही
जीवित।

(http://www.geeta-kavita.com)

कवि ने 'वे आँखें' नामक कविता में नारी के प्रति भारतीय ग्रामीण दृष्टिकोण का बड़ी ही तटस्थता के साथ चित्रण किया है, जहाँ नारी को जूती के समान माना गया है -

खैर,पैर की जूती, जोरू
न सही एक, दूसरी आती,
पर जवान बेटे की सुधकर
साँप लोटते, फटती छाती।

(पाण्डेय 1982:160)

2.7. स्वतंत्र नारी :

पंत ने अपनी कविताओं में नारी-चित्रण समय के सापेक्ष किया है। इसीलिए उनकी कविताओं में एक ओर जहाँ नारी का रूप-वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी ओर नारी मुक्ति का स्वर भी गुंजित होता है। कवि नारी के उत्थान के प्रति हमेशा सजग रहे हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में नारी की दशा का यथार्थ चित्रण किया है। 'नर की छाया' कविता में कवि ने व्यंग्य और उपहास के माध्यम से नारी के साथ हुए अन्याय के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है -

वह नर की छाया नारी !
चिर नमित नयन, पद विजड़ित,
वह चकित,भीत हरिणी-सी
निज चरण चाप से भी शंकित।
मानव की चिर सहधर्मिणी,
युग-युग से मुख अवगुंठित,
स्थापित घर के कोने में
वह दीपशिखा-सी कंपित।

(पाण्डेय 1982:159)

कवि ने नारी को दीपशिखा-सी कंपित कहकर नारी की उस दुःखद स्थिति का वर्णन किया है, जिसमें नारी को घर के एक कोने में रख दिया जाता है मानो बाहर आने से वह नष्ट हो जाएगी।

पंत छायावादी कवि होने के साथ-साथ प्रगतिवादी कवि भी हैं। इसीलिए प्रगतिवाद तक आते-आते उनका नारी विषयक दृष्टिकोण बदलने लगा। पहले उन्होंने अपनी कविताओं में नारी के विविध रूपों का चित्रण किया था, पर बाद में उन्होंने नारी के उत्थान के प्रति अधिक ध्यान दिया। उनके लिए नारी दिव्य प्रतिमा है, पर वह मुक्त नहीं है। नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा को बरकरार रखने के लिए कवि समाज के बंधनों को तोड़ना चाहते हैं। इसीलिए वे नारी की मुक्ति के लिए आवाज उठाते हैं -

मुक्त करो नारी को, मानव
चिर बंदिनि नारी को
युग-युग की बर्बर कारा से
जननि, सखी, प्यारी को।

(बाफना 1969:307)

पंत अनुभव करते हैं कि नारी को भी पुरुष के समान ही अधिकार मिलने चाहिए। इसीलिए उन्होंने अपनी कविताओं में नारी-चित्रण के साथ-साथ नारी की प्रतिष्ठा भी की है। नारी की दयनीय स्थिति के प्रति कवि अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए लिखते हैं -

वह समाज की नहीं इकाई, शून्य समाज अनिश्चित
उसका जीवन मान, मान पर नर के हैं अवलंबित
मुक्त हृदय वह स्नेह प्रणय कर सकती नहीं प्रदर्शित,
दृष्टि, स्पर्श, संज्ञा से वह हो जाती सहज कलंकित।

(बाफना 1969:307)

युगों-युगों से पुरुष-प्रधान समाज में नारी केवल योनि तक ही सीमित रह गयी है। पंत विद्रोही स्वर में नारी की स्वतन्त्रता का समर्थन करते हैं और उन्होंने उसे भोग की वस्तु न समझ कर प्रतिष्ठित मानवी का दर्जा दिया है -

योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी
प्रतिष्ठित
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।

(बाफना 1969:307)

3. निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि पंत की कविताओं में नारी का व्यापक चित्रण हुआ है। उन्होंने नारी-सौंदर्य का अतींद्रिय चित्रण किया है, स्थूल नहीं। छायावादी काव्य के मूल में नारी के मांसल रूप का अभाव है। इसीलिए पंत की कविताओं में भी ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ मांसल सौंदर्य को महत्व दिया गया हो। छायावादी कविताओं में पंत ने नारी के विविध रूपों का चित्रण किया है और प्रगतिवादी कविताओं में उन्होंने नारी के प्रति हुए अत्याचार और शोषण के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह का भाव प्रकट किया है ।

ग्रंथ-सूची

नगेंद्र और हरदयाल. संपा. हिन्दी साहित्य का इतिहास. अड़तीसवाँ एवं उनतालीसवाँ. नोएडा : मयूर पेपरबैक्स, 2011.

पाण्डेय, रामजी. सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व. प्रथम. दरियागंज : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1982.

पंत, सुमित्रानंदन. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली. दूसरा . खंड. एक . नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004.

बख्शी, निर्मल. पंत-साहित्य : आत्मकथात्मक परिदृश्य. प्रथम. दिल्ली : राष्ट्रभाषा प्रकाशन, 1977.

बाफना, प्रेमलता. पंत का काव्य . प्रथम. देहरादून : साहित्य सदन, 1969.

शुक्ल, रामचंद्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. प्रथम. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013.

सिंह, विजयपाल, संपा. छायावाद के प्रतिनिधि कवि. दशम. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013.

वेबसाइट

http://www.namaste.in/hi/litrature 31.10.2018

http://www.geeta-kavita.com 31.10.2018

संपर्क-सूत्र :

सहायक अध्यापक, हिन्दी विभाग

नगाँव महाविद्यालय, नगाँव, असम

ई-मेइल : pujabaruah7274@gmail.com

मोबाइल नं॰ : 8486316810